बंद होने की कगार पर हैं चीनी मिलें

लखनऊ, शनिवार। जैसा कि पिछले कुछ वर्षों में देखा गया है कि चीनी मिलें चीनी के दाम में गिरावट की वजह से घाटे में चल रही हैं। आर्थिक संकट के कारण कुछ चीनी मिलें बन्द होने की कगार पर हैं और किसानों को भी अत्यधिक आर्थिक समस्या से जूझना पड़ रहा है। अतरू ये अत्यन्त आवश्यक है कि चीनी मिलों को आर्थिक लाभ की स्थिति में लाने के लिए चीनी के अतिरिक्त अन्य उपायों, पदार्थों का उत्पादन किया जाये। इन समस्याओं से उबरने के लिए ऊर्जा फसलों जैसे गन्ना, चुकन्दर, मीठा ज्वार, सेल्यूलोज पदार्थों इत्यादि का उपयोग करके चीनी मिलों द्वारा एल्कोहल बनाया जा सकता है। इन सभी समस्याओं पर विचार मंथन के लिए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में एक सेमिनार ्यउपोष्ण कटिबंधीय भारत में चीनी उद्योग की स्थिरता हेतु ऊर्जा फसलों का उपयोग्य का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर भारत एवं चीनी तकनीक संघ (निष्ठा) एवं गन्ना विकास निदेशालय, लखनऊ के तत्वावधान में किया गया। इस आयोजन में देश के तमाम अनुसंधान संस्थानों, चीनी मिलों और सरकारी संस्थानों के सौ से ज्यादा जाने-माने वैज्ञानिकगण और अधिकारीगण उपस्थित हुए। कार्यक्रम के उद्घाटन के दौरान संस्थान के

घटते दाम चिंता का विषय

निदेशक डा0 ओ0के0 सिन्हा ने चीनी मिलों में घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय कारकों से उत्पन्न आर्थिक समस्याओं की चर्चा की। उन्होंने गन्ने को इथेनॉल के उत्पादन में उपयोग करने पर बल दिया। गन्ने के अतिरिक्त चुकन्दर से इथेनॉल के उत्पादन के बारे में भी बताया। कार्यक्रम का उद्घाटन बायोटेक पार्क के अध्यक्ष डा0 पी0के0 सेठ ने किया और कार्यक्रम में मौजूद लोगों को चीनी मिलों की उन्नति और आर्थिक समृद्धि के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित किया। डा0 सेठ ने संस्थान और निष्ठा के तत्वावधान में आयोजित इस अभूतपूर्व कार्यक्रम की सराहना की। उद्घाटन के दौरान डा0 राममूर्ति सिंह, अध्यक्ष, निष्ठा और अन्य अतिथिगणों ने गन्ने की खोई व अन्य ऊर्जा फसलों से एल्कोहल बनाने पर विचार-विमर्श किया। इन फसलों को किस फसल प्रणाली में उगाया जाये तथा गन्ने की प्रजनन प्रक्रिया में किस प्रकार का बदलाव किया जाये, इन सभी विषयों पर वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों ने गहन चर्चा की। डा0 बक्शी राम, निदेशक, गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ने ऊर्जावान गन्ने के उत्पादन के लिए संस्थान के प्रयासों के बारे में बताया। डा0 पुष्पा सिंह, प्रधान वैज्ञानिक ने इथेनॉल उत्पादन की विभिन्न तकनीकों के बारे में बताया। कार्यक्रम के समापन में सभी अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों ने एक स्वर से गन्ने व अन्य फसलों का उपयोग एल्कोहल बनाकर चीनी मिलों की आर्थिक स्थिति अच्छी करने पर बल दिया।

लखनऊ | 23 अगस्त 2015 अमर उजाला राजधानी

'इथेनॉल उत्पादन से दूर होगा चीनी मिलों का संकट'

लखनऊ (ब्यूरो)। चीनी के दाम में गिरावट के चलते शुगर मिलों को संकट दूर करने के लिए वैकल्पिक तरीके तलाशने होंगे। शुगर फैक्ट्रियां इथेनॉल का ज्यादा उत्पादन करके तथा गन्ना, चुकंदर व मीठी ज्वार से एल्कोहल बनाकर अपनी अर्थव्यवस्था और बेहतर बना सकती हैं। ये सुझाव भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. ओके सिन्हा दिया। वे शनिवार को संस्थान में उत्तर भारत चीनी तकनीक संघ (निष्टा) और गन्ना विकास निदेशालय लखनऊ की ओर से आयोजित 'उपोष्ण कटिबंधीय भारत में चीनी उद्योग की स्थिरता के लिए ऊर्जा फसलों का उपयोग' पर आयोजित सेमिनार में बोल रहे थे।

उन्होंने चीनी मिलों में घरेलू और अंतरराष्ट्रीय कारकों से उत्पन्न आर्थिक समस्याओं पर चर्चा की। बायोटेक पार्क के अध्यक्ष डॉ. पीके सेठ ने चीनी मिलों की उन्नति और आर्थिक समृद्धि के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित किया।